© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

लाला लाजपत राय का हिसार में योगदान

(Contribution of Lala Lajpat Rai in Hisar)

सुनील कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
राजकीय स्त्रातकोतर महाविद्यालय, सिवानी
मो.न. 9416231440
E-mail: sunilhissar@gmail.com

Abstract:

पंजाब केसरी लाल लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अहम सिपाही थे। 28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा जिले में लाला लाजपत राय का जन्म हुआ था। लाला लाजपतराय जी ने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद कानून की उपाधि प्राप्त करने के बाद जगरांव में वकालत शुरू कर दी। इसके बाद उन्होंने हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। इसी दौरान लालाजी कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। 1889 में नगर पालिका हिसार के ऑनरेरी सचिव बने। लाला लाजपत राय आधुनिक हिसार के विकास के सूत्रधार रहे हैं। 1889 में नगर पालिका के पहले भारतीय सचिव बनने के साथ ही हिसार के शिल्पी होने का गौरव भी उनके नाम हैं। नगर की स्वच्छता और शिक्षासंस्थाओं की सहायत की। चुंगी चोकियों पर होने वाले भ्रष्टाचार का रोका, उन्होंने इस प्रकार नगर पालिका के एक आदर्श सचिव का उदाहरण लोगों के सामने प्रस्तुत किया।
हिसार से लाला लाजपत राय ने राजनीति में कदम रखा। इसके बाद हिसार के पत्ते पर ही नेशनल कांग्रेस अधिवेशन में सन् 1888 में हिस्सा लिया और कांग्रेस के सदस्य बने। 1888 और 1889 के नेशनल कांग्रेस के वार्षिक सत्रों के दौरान उन्होंने हिस्सा लेते हुए जंगे आजादी में कूद पड़े। लाला जी ने ही हिसार में सन् 1886 में आर्य समाज की स्थापना की थी। 30 अक्टूबर 1928 में लालाजी ने लाहौर में 'साइमन कमीशन' के विरूद्ध आन्दोलन का नेतृत्व किया और अंग्रेजों का दमन सहते हुए लाठी प्रहार से घायल हो गए, इसी आघात के कारण 17 नवम्बर 1928 को उनका देहान्त हो गया।

जीवन भर ब्रिटिश हुकुमत का सामना करते हुए अपने प्राणों की परवाह न करने वाले पंजाब केसरी लाल लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अहम सिपाही थे। देश के लिए उनकी निष्ठा और देशभक्ति के कारण वह हमारी यादों में सदैव अमर है। गरम दल

का एक प्रमुख नेता होने के साथ साथ लाला लाजपत राय जी हमेशा ही देश को खुद से ऊपर मानते थे।

28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा जिले में लाला लाजपत राय का जन्म हुआ था। लाला लाजपतराय के माता पिता उन्हें प्रेम से लाजपत राय के पिता जी वैश्य थे, किंतु उनकी माता जी सिक्ख परिवार से थीं। अलग अलग धर्म के होने के बाद भी दोनो एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह से समझते थे।

लाला लाजपत राय जी ने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद कानून की उपाधि प्रापत करने के लिए 1880 में लाहौर के 'राजकीय कॉलेज' में प्रवेश लिया। इस दौरान वे आर्य समाज के आंदोलन में शामिल हो गए। लाला जी ने कानूनी शिक्षा पूरी करने के बाद जगरांव में वकालत शुरू कर दी। इसके बाद उन्होंने हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। स्वामी दयानंद सरस्वती के निधन के बाद लालाजी ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर एंग्लो वैदिक कॉलेज के विकास के प्रयास करने शुरू कर दिए।

इसी दौरान लालाजी कांग्रेस के प्रभाव में आए। हिसार में लालाजी ने कांग्रेस की बैठकों में भाग लेना शुरू कर दिया और धीरे–धीरे कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। हिसार की जैन गली निवासी राधा रानी उनकी जीवनसंगिनी बनी। उनका प्रभाव लोगों पर कितना था इसका अंदाला इसी बात से लगाया जा सकता है कि लाला हिंदू परिवार से थे और मुस्लिम बाहुल्य एरिया से सर्वसम्मति से जनप्रतिनिधि चुने गए। 1889 में नगर पालिका हिसार के ऑनरेरी सचिव बने। वे अंग्रेजी हुकूमत में पहले भारतीय सचिव थे। हिसार में आकर लाला लाजपत राय ने जल्द ही जनसेवा का अवसर खोज निकला। उन्हें पता चला की मुनिसिप्लिटी में सचिव का पद खाली है। जिसके कारण उनका कार्य सुचारू से हो नहीं पा रहा है। उन्होंने तत्काल अपनी अवैतनिक सेवाएं उस पद के लिए समर्पित कर दी। उनके अनेक मित्रों ने कहा कि जब वह स्थान वैतनिक है तो आप वेतन क्यों नहीं लेते? मित्रों का परामर्श सुन कर लाला जी हंस उठते थे और कहा करते थे कि मैं उस स्थान पर जन–सेवा लोभ से आया हूँ पैसे के लोभ से नहीं। लाला जी ने बहुत समय तक नगर पालिका सचिव के पद पर काम किया और इस अवधी में नगर में कई सुधार कार्य करवाए। लाला लाजपत राय आधुनिक हिसार के विकास के सूत्रधार रहे हैं। 1889 में नगर पालिका के पहले भारतीय

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

सचिव बनने के साथ ही हिसार के शिल्पी होने का गौरव भी उनके नाम हैं उनके कार्यालय में हिसार में पहली ईंटों की पक्की सड़क बनी जो इलाइट सिनेमा के पीछे रेड स्क्वेयर मार्केट और रामपुरा मोहल्ले के बीच की सड़क है। नगर की स्वच्छता के लिए प्रयास और शिक्षा संस्थाओं की सहायता की। चुंगी चोकियों पर होने वाले भ्रष्टाचार को रोका।

लाल लाजपत राय के आग्रह पर पहली बार नगर पालिका का पदेन अध्यक्ष डीसी को बनाया गया। यह 1890—91 में पंजाब गवर्नर का हिसार में नगर पालिका के माध्यम से हो, इस पर जब सचिव अड़े तो वोटिंग हुई। उस समय पालिका के 25 सदस्यों ने वोटिंग की। जिसमें 12 अंग्रेज एक तरफ व दूसरी तरफ 12 हिंदुस्तानी थे। 25वां वोट लाला लाजपत राय का था जो भारतीयों के पक्ष में आया। इस जीत के साथ ही पहली बार गवर्नर के आगमन पर स्वागत पालिका सचिव की ओर से किया गया। इस दौरान लाला ने गवर्नर को लोक प्रशासन की कमियाँ गिनवाई। इसके बाद अध्यक्ष डीसी बने।

हिसार शहर के नगर निगम का इतिहास 145 साल से भी पुराना है। जब इसे कमेटी कहा जाता था। इसकी स्थापना 1867 में हुई थी। कमिश्नर, सचिव और सदस्यों से कमेटी की कार्यकारिणी गठित होती थी। हालांकि विभाग के पास 4 दिसंबर 1891 से 27 मार्च 1893 तक का कार्यवाही रजिस्टर ही मौजूद है।

जो उर्दू में लिखा गया है। रजिस्ट्रर के अनुसार डॉक्टर मार्कर कमेटी के चेयरपर्सन थे। लाला लाजपतराय सचिव थे। तब कमिश्नर ही सदस्यों का चुनाव करते थे। रजिस्टर में सभी सदस्यों ने अपने हस्ताक्षर उर्दू में किए है, पर लाला जी ने अंग्रेजी में अपने साइन किए हैं। बता दे, कि लाला लाजपत राय ने हिसार में छह साल रहकर वाकलत की थी। तब कमेटी का हर मेंबर साहब हुआ करता था। उसे सम्मान दिया जाता था और उसके नाम के बाद बाकायदा साहब (सर नेम) लिखा जाता था। हिसार की इस कमेटी को सेकंड क्लास दर्जा मिला हुआ था। क्षेत्रीय अभिलेखागार हिसार मंडल के पास मौजूद दस्तावेजों में इस संबंध में कई दस्तावेज मौजूद हैं। 1867 में कमेटी की स्थापना के साथ शहरीकरण का काम भी शुरू हो गया था। इसके अलावा विभाग के पास 1950 से 1977 तक की हांसी, बल्लभगढ़, टोहाना, फरीदाबाद, रेवाड़ी, भिवानी, फतेहाबाद सहित कई जिलों की नगर कमेटी के कार्यवाही रजिस्टर, गजट और अन्य दस्तावेज मौजूद है। तत्कालीन हिसार की जनसंख्या आज के

एक वार्ड के बराबर हुआ करती थी। 1883–84 के गजेटियर के अनुसार हिसार की जनसंख्या 14 हजार 167 थी। जो आज छः लाख के आंकड़े को पार कर चुकी है। इनमें सात हजार 827 पुरूष व छह हजार 340 महिलाएँ थी। घरों की संख्या की बात करें तो वह मात्र 2205 थी। 1870 से 1876 के मध्य कमेटी की आय 29 हजार से 13 हजार के मध्य थी। कमाई का सबसे बड़ा साधन चुंगी कर हुआ करता था। जो कमेटी एरिया में आने वाले सामान पर उसकी कीमत के अनुसार वसूली जाती थी।

उन्होंने इस प्रकार नगर पालिका के एक आदर्श सचिव का उदाहरण लोगों के सामने प्रस्तुत किया। अपनी इन सेवाओं और सदभावनाओं के कारण लाला जी हिसार में बड़े लोकप्रिय हो गये। लोग स्वभावतः उन्हें अपना नेता मानने लगे।

हिसार से लाला लाजपत राय ने राजनीति में कदम रखा। इसके बाद हिसार के पत्ते पर ही नेशनल कांग्रेस अधिवेशन में सन 1888 में हिस्सा लिया और कांग्रेस के सदस्य बने। 1888 और 1889 के नेशनल कांग्रेस के वार्षिक सत्रों के दौरान उन्होंने हिस्सा लेते हुए जंगे आजादी में कूद पडे। लाला जी ने ही हिसार में सन् 1886 में आर्य समाज की स्थापना की थी।

हिसार में देश को एक महान स्वाधीनता सेनानी देने के साथ ही कांग्रेस को एक महान लीडर दिया। वकालत छोड़कर हिसार की राजनीति में कदम रखने वाले लाला लातपत राय ने यहीं से राजनीति की शुरूआत करते हुए उसमें आगे बढ़े। काग्रेस में हिसार का अपना पता देकर प्रारंभिक सदस्यता के साथ आगे बढ़े। इसके बाद देश में एक वक्त ऐसा आया जब लाल–बाल–पाल का मतलब कांग्रेस हो गया। यानि वे काग्रेस का सबसे मजबूत हिस्सा बने। फील्ड मूवमेंट शुरू किया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पर्याय बन गए।

हरियाणा की राजनीति देश की राजनीति बन गई। इसके अलावा 1905 में बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा के दौरान उन्होंने अपने देश की वस्तु अपनाना और दूसरे देश की वस्तु का बहिष्कार की दिशा में कदम बढ़ाया। जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक आंदोलन का रूप दिया। इसके अलावा उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में लोगों को जागरूक करने के लिए पगड़ी संभाल जट्टा के भाव को लोगों तक पहुंचाया। उन्हें पगड़ी के माध्यम से हरियाणा और पंजाब के इलाके में पगड़ी को मान सम्मान का प्रतिक बताते हुए लोगों को

राष्ट्रीय भावना से जोड़ने का काम किया। यहीं भावना आगे चलकर अंग्रेजों के प्रति लड़ाई बनी।

लाला लाजपत राय पशुचिकित्या एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय हिसार में स्थित हरियाणा सरकार का विश्वविद्यालय है। इसका नामकरण भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लाला लाजपत राय के नाम पर किया गया है।

लाल लाजपतराय के जीवन में अहम पड़ाव तब आया जब वह 1917 में अमेरिका के न्यूयार्क शहर गए और उन्होंने वहाँ इंडियन होम रूल लीग ऑफ अमेरिका नाम से एक संगठन की स्थापना की इस संगठन का उदेश्य भारत से बाहर रहकर भारत के लिए काम करने का था। 1920 में जब वह भारत वापस आए तब तक वह एक नायक के रूप में उभरे चुके थे। इसी लाला लाजपतराय के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन पंजाब में जंगल में आग की तरह फैल गया और जल्द ही वे पंजाब का शेर और पंजाब केसरी जैसे नामों से पुकारे जाने लगे. लालाजी ने अपना सर्वोच्च बलिदान साइमन कमीशन के समय दिया।

तीन फरवरी 1928 को जब साइमन कमीशन भारत पहुंचा तो उसके विरोध में पूरे देश में आग भड़क उठी। पूरे देश में जगह जगह इस कमीशन के खिलाफ आवाजें उठाई गई। 30 अक्टूबर 1928 में लालाजी ने लाहौर में 'साइमन कमीशन' के विरूद्ध आन्दोलन का नेतृत्व किया और अंग्रेजों का दमन सहते हुए लाठी प्रहार से घायल हो गए, इसी आघात के कारण 17 नवम्बर 1928 को उनका देहान्त हो गया। अपने अंतिम भाषण में उन्होंने कहा, 'मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी।' और इस चोट ने कितने ही ऊधमसिंह और भगतसिंह तैयार कर दिए, जिनकें प्रयत्नों से हमें आजादी मिली।

लाला जी को श्रद्धांजलि देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, ''भारत के आकाश पर जब तक सूर्य का प्रकाश रहेगा, लालाजी जैसे व्यक्तियों की मृत्यु नहीं होगी। वे अमर रहेंगे।''

संदर्भ सूची :

1. पंजाब केसरी लाल लाजपत राय – पी.के.जैन
2. लाला लाजपत राय – मीना अग्रवाल
3. जिला गैजेटीअर हिसार
4. आधुनिक भारत के निर्माता–लाला लाजपत राय, डॉ. अनिल कुमार सिंह
5. लाला लाजपत राय – प. श्रीराम शर्मा आचार्य